बुआई का समय – बीज की बुआई हेतु उपयुक्त समय मार्च से अप्रैल माह के मध्य होता है।

बुआई हेतु उपयुक्त विधि – बीज की बुआई जर्मिनेशन ट्रे अथवा क्यारी में 5 से 8 सेमी. रेत की परत बिछाकर करना उचित होता है। पोलीथीन बेग में भी सीधे बीज की बुआई की जा सकती हैं परंतु अंकुरण प्रतिशत जर्मिनेशन ट्रे में की गई बुआई की अपेक्षा कम प्राप्त होता है।

रखरखाव/रोकथाम – प्रारंभ में पौधे अधिक कोमल होने के कारण उन्हें तेज घूप एवं गर्म हवा से बचाना आवश्यक होता है एवं सामान्य सुरक्षा की दृष्टि से वृक्षारोपण के समय पौधे की ऊँचाई 25 से 30 सेमी. होना चाहिए। जर्मिनेशन ट्रे से पौधे को पोलीथीन में प्रतिरोपित करते समय सावधानी पूर्वक पौधे की चारों तरफ की रेत को साथ में लेकर रोपण करना चाहिए अन्यथा पौध मृत प्रतिशत के बढ़ने का खतरा रहता है। रोपण क्षेत्र में मवेशियो से सुरक्षा के लिए तार या काटों की बागड़ लगाना रोपण के पहले वर्ष में कम से कम दो बार निदाई एवं गुडाई करने से पौधें में अच्छी बढ़त होती है। पौधों की जड़ों को दीमक एवं अन्य बीमारियों से बचाने के लिए कीटनाशक दवा जैसे वॉविस्टीन, मैलाथियान आदि का 1 प्रतिशत सान्द्रता के धोल का छिड़काव करना चाहिए।

उपयोगिता – इसकी लकड़ी का उपयोग कार्ड, सेल्फ, बोर्ड, सिलेट फेम एवं अन्य पैकिग सामग्री जैसे कॉफी बाक्स बनाने में किया जाता है। इसके साथ ही इसकी लकड़ी जलाऊ लकड़ी के रूप में उपयोग की जाती है। इसके फल का त्रिफला चूर्ण तैयार करने में महत्वपूर्ण घटक के रूप में प्रयोग होता हैं जो कि ऑखों की सूजन एवं आखों से संबंधित अन्य बीमारियों के लिए उपयोग किया जाता है। अधपके फल में पाए जाने वाले तेल की गुणवत्ता केस्टर आयल के सामान होती है जिसके कारण यह ऑयल बालों में और अंदरूनी चोट से आई सूजन आदि में उपयोग किया जाता है। इसके फल, जड़ और छाल का उपयोग पेट संबंधी रोग कुष्ट रोग, पित्त, बवासीर, पुराने ज्वर एवं पेचिस आदि में औषधीय के रूप में किया जाता है। इसके बीजो से प्राप्त तेल का उपयोग साबुन निर्माण सौन्दर्य प्रसाधनों एवं लेप निर्माण आदि में किया जाता है। इसके बीज का पान के साथ प्रयोग मंदग्नि, अपच रोग के उपचार में किया जाता है।

सम्पर्क

डॉ. अर्चना शर्मा

वैज्ञानिक

बीज शाखा

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर (म.प्र.)

0761-2666529, 2665540

मूल्य रु. 10/-

बहेड़ा

(टरमिनेलिया बेलेरिका)

बीज प्रभाग

राज्य वन अनुसंधान संस्थान

पोली पाथर, जबलपुर (म. प्र.)

प्रजाति का नाम – बहेड़ा

वानस्पतिक नाम – टरमेनेलिया बेलेरिका

प्रस्तावना – यह काम्ब्रेटेसी कुल का सदस्य है। इस वृक्ष की ऊँचाई 15 से 20 मीटर एवं गोलाई 100 से 150 सेमी. एवं कभी–कभी इससे भी अधिक होती है। यह सागौन, साल एवं मिश्रित पर्णपाती वनों एवं अनेको किस्म की मिट्टी में पाया जाता है। आर्द्र क्षेत्रों में इसकी वृद्धि अच्छी होती है जबकि शुष्क क्षेत्रों में ठीक से वृद्धि नहीं कर सकता। मिश्रित वनों में बहुतायत से पाया जाता है। यह प्रकाशप्रिय (लाईट डिमान्टर) वृक्ष है, जो कि अधिक सर्दी के कारण जमने की स्थिति/पाला पड़ने की अवस्था के प्रति संवेदनशील है और अधिक सूखें के प्रति प्रतिरोधक क्षमता रखता है। प्राकृतिक रूप से एक हजार मिली0 से लेकर 3000 मिली0 तक बार्षिक वर्षा वाले क्षेत्रों में इसकी अच्छी बढ़त देखी गई है। इसकी छाल धूसर भूरे रंग की होती है एवं इसकी लकड़ी पीले भूरे रंग की होती है। अप्रैल से मई माह में हरे सफेद रंग के फूल के साथ नई पत्तियॉं लगने लगती है। इसके फल नवम्बर से फरवरी के मध्य लगते है एवं फरवरी मार्च में पक कर तैयार होते है। फल लम्बे अंडाकार भूरे पीले रंग के मोटे आवरण युक्त होते हैं । इसके फलों को जंगली जानवर एवं पक्षी बहुत चाव से खाते है। इसकी बीजों की अंकुरण क्षमता इस फैमली के अन्य प्रजातियों की अपेक्षा अधिक होती है।

प्राप्ति स्थान – मध्यप्रदेश में यह बालाघाट, होशंगाबाद, देवास, धार, इंदौर, सीधी, उमरिया आदि जिलों में पाया जाता है।

मृदा का प्रकार – रेतीली दोमाट, काली कपासी, दोमट मिटटी में अच्छी बढ़त होती है।

बीज चक्र – वृक्ष में प्रतिवर्ष फल लगते है ओर बीज प्राप्त होता है।

पुष्पन का समय – अप्रैल से मई माह के मध्य पुष्प लगते है।

फलन का समय – नवम्बर से दिसम्बर के मध्य फल लगते है जो कि जनवरी से फरवरी अंत तक पककर तैयार होते है।

एकत्रीकरण समय – फल का एकत्रीकरण मार्च माह के प्रथम से द्वितीय सप्ताह के मध्य किया जाना उचित होता है। एकत्रित किए गए फल को उपयोग करने के पूर्व कवच रहित कर कुछ समय तक धूप में सुखाना आवश्यक होता है।

प्रति किलो बीजों की संख्या – प्रति किलोग्राम बीज में बीजों की संख्या 400 से 450 तक होती है।

जीवन क्षमता अवधि – बीज की जीवन क्षमता अवधि 6 से 12 माह तक होती है। जिसमें ताजे बीज की तुलना में अंकुरण धीरे – धीरे घटता जाता है।

अंकुरण प्रतिशत – 30 से 55 प्रतिशत तक होता है।

सामान्य भंडारण की स्थिति मे –

प्रथम तीन माह में – 30 से 55 प्रतिशत

तीन से छः माह में – 30 से 40 प्रतिशत

छः से नौ माह में – 25 से 30 प्रतिशत

नौ से बारह माह में – 15 प्रतिशत से कम

पौध प्रतिशत – अंकुरण पश्चात पाई जाने वाली पौध मृत प्रतिशत के कारण मात्र 30 से 40 प्रतिशत तक ही पौधे प्राप्त होते है।

उपयुक्त भंडारण – बीज को पोलीथीन बेग में सिलिका जैल रसायन के साथ भंडारित करने पर 1½ वर्ष पश्चात तक 20 से 25 प्रतिशत तक अंकुरण प्राप्त होता है।

बुआई पूर्व उपचारण – बीज को 10 प्रतिशत सांद्रता के सल्फ्यूरिक अम्ल के साथ 10 मिनिट तक डूबोकर साफ पानी से धोने के पश्चात बुआई करने पर अनुउपचारित बीज की तुलना में 1 से 1½ गुंना अधिक अंकुरण प्राप्त होता है।

अंकुरण हेतु उपयुक्त माध्यम – अंकुरण हेतु बीज की बुआई बारीक रेत में किया जाना उपयुक्त होता है। बीज में अंकुरण 1 सप्ताह पश्चात प्रारंभ हो जाता है एवं 1 माह तक अंकुरण आता रहता है। अंकुरण हेतु आवश्यक अनुरूप स्थितियॉं प्राप्त होने पर अंकुरण में तेजी देखी गई है। बीज कवच को हटाकर निकले हुए बीज को सीधे बुआई करने पर अंकुरण 15 दिनों में पूर्ण हो जाता है परंतु अधिक मात्रा में पौध तैयार करने के लिए यह विधि महॅगी साबित होती है।